

बार्तिमाई से सीखें

बार्तिमाई के उदाहरण पर हमारा ध्यान इस बात पर अधिक केंद्रित होगा कि बार्तिमाई ने क्या किया, न कि इस पर कि यीशु ने उसके लिए क्या किया।

1. उसने स्वयं पुकारा, दूसरों पर निर्भर नहीं रहा

पवित्र वचन बताता है कि बार्तिमाई अंधा था और जब यीशु यरीहो से बाहर निकले, तो उनके साथ उनके चेले और एक बड़ी भीड़ थी। यह स्पष्ट करता है कि एक अंधे व्यक्ति के लिए भीड़ के बीच में अपनी आवाज़ यीशु तक पहुँचाना कितना कठिन रहा होगा। वह चाहता तो आसपास के किसी व्यक्ति से यह विनती कर सकता था कि वे उसकी आवाज़ यीशु तक पहुँचा दें या कुछ लोगों से अनुरोध कर सकता था कि वे उसे यीशु के पास ले जाएँ। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने भीड़ की परवाह किए बिना यीशु को पुकारना शुरू कर दिया।

हमें इससे यह सीखना चाहिए कि अपनी तकलीफों को यीशु तक पहुँचाना हमारा स्वयं का उत्तरदायित्व है। यदि हम लोगों पर निर्भर रहेंगे, तो न केवल वे हमारी सहायता नहीं करेंगे, बल्कि समय भी निकल जाएगा।

क्या होता यदि बार्तिमाई दूसरों से सहायता माँगता और स्वयं न पुकारता?

क्या सच में इतनी भीड़ में लोग स्वयं यीशु के दर्शन को छोड़कर एक अंधे व्यक्ति की सहायता करने आते? यदि कुछ लोग मदद के लिए तैयार भी हो जाते, तो संभवतः जब तक वे बार्तिमाई को यीशु तक पहुँचाते, तब तक यीशु वहाँ से आगे बढ़ चुके होते। इस प्रकार बार्तिमाई की पीड़ा ज्यों की त्यों बनी रहती।

हमारे साथ भी यही होता है। जब हमें कोई समस्या होती है, तो हम किसी पास्टर या विश्वासी भाई-बहन के पास प्रार्थना करवाने जाते हैं, लेकिन स्वयं परमेश्वर के सामने अपने दुख को प्रस्तुत करने से बचते हैं। हमें पहले स्वयं यीशु को पुकारना चाहिए।

2. लोगों के डाँटने पर और भी जोर से पुकारा

अक्सर जब हम प्रभु के निकट आने का प्रयास करते हैं, तो पूरी दुनिया हमें रोकने का प्रयास करती है। कई बार हमारा परिवार भी इसमें शामिल होता है। इस दबाव के कारण हम यीशु को पुकारना बंद कर देते हैं। बार्तिमाई के साथ भी ऐसा ही हुआ। जब उसने पुकारना शुरू किया, तो लोग उसे डाँटने लगे कि वह चुप हो जाए। लेकिन उसने हार नहीं मानी, बल्कि और भी जोर से पुकारने लगा।

प्रिय भाइयों और बहनों, प्रारंभ में हमें भी दबाया जाता है ताकि हम प्रभु में आगे न बढ़ें। लेकिन यह समय लोगों की बातें सुनकर पीछे हटने का नहीं, बल्कि और अधिक विश्वास और पवित्रता के साथ प्रभु में आगे बढ़ने का है। जैसे बार्तिमाई ने लोगों की डाँट के बावजूद पुकारना नहीं छोड़ा, हमें भी तब तक प्रयास करना चाहिए जब तक उत्तर न मिल जाए। अंततः उसकी यह कोशिश सफल हुई और यीशु ने उसे अपने पास बुलाया।

3. अपना पुराना वस्त्र त्यागकर यीशु के पास गया

यदि बार्तिमाई के मन में संदेह होता कि यीशु उसे ठीक नहीं करेंगे, तो वह अपने वस्त्र नहीं फेंकता। लेकिन जैसे ही यीशु ने उसे बुलाया, उसने सबसे पहले अपने पुराने वस्त्रों को फेंक दिया। इसका अर्थ यह है कि उसे पूर्ण विश्वास था कि अब उसे इन वस्त्रों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

हमें इससे क्या सीखना चाहिए? क्या हमारे पास भी ऐसे पुराने वस्त्र हैं? हाँ, हमारे पास भी ऐसे बहुत से पुराने वस्त्र हैं, जिन्हें हमें त्याग देना चाहिए—हमारी बुरी आदतें, पाप के स्रोत, और गलत कार्यों में पड़ने के असंख्य कारण। यदि हमने यीशु पर विश्वास कर लिया है, तो हमें अपने सभी पापों को त्याग देना चाहिए, अन्यथा हम कभी भी यीशु की पवित्रता के निकट नहीं आ पाएँगे।

जब हम अपने इन सभी बंधनों को छोड़ देते हैं, तो हम अपने कर्मों से यह प्रमाणित करते हैं कि हमें यीशु पर अटूट विश्वास है। यही वह बात है जो हमारे परमपिता को प्रिय लगती है। और इसके परिणामस्वरूप, वह हमें भी वही आशीष देता है, जिसकी लालसा बड़े-बड़े याजक भी रखते हैं—“तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

4. कष्ट बताए बिना सीधे वही माँगा जो चाहिए था

बार्तिमाई ने सीधे कहा, “मैं देखना चाहता हूँ।” उसने अपनी तकलीफें गिनाने का प्रयास नहीं किया। वह चाहता तो कह सकता था कि, “प्रभु, मैं जन्म से अंधा हूँ, मुझे बहुत ताड़ना मिलती है, मैं दो वक्त की रोटी भी ठीक से नहीं कमा पाता,” आदि। लेकिन उसने ऐसा नहीं कहा, क्योंकि उसे पता था कि जिसके सामने वह खड़ा है, वह उसकी तकलीफों को पहले से जानता है।

यदि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु हमारी सारी समस्याएँ हल कर सकते हैं, तो हमें यह भी मानना चाहिए कि उन्हें हमारी तकलीफों की पूरी जानकारी है। इसलिए हमें यीशु से प्रार्थना करते समय अपनी तकलीफें गिनाने के बजाय सीधे वही माँगना चाहिए जो हमें चाहिए। यदि हमारी माँग सही होगी और हमारा विश्वास दृढ़ होगा, तो परमेश्वर अवश्य उसे पूरा करेंगे।

5. ज़रूरत पूरी होने के बाद यीशु से मुँह नहीं मोड़ा

बार्तिमाई को जब दृष्टि प्राप्त हुई, तब यीशु ने उससे कहा, “जा, तेरा विश्वास तुझे ठीक कर चुका है।” यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि यीशु ने उसे “आ” नहीं, बल्कि “जा” कहा। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि वह चाहता, तो अपने घर लौट सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने अपनी नई दृष्टि का उपयोग संसार को देखने के लिए नहीं, बल्कि यीशु का अनुसरण करने के लिए किया।

हमें इससे यह महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है कि जब हमारी प्रार्थनाएँ पूरी हो जाएँ, तब भी हमें उतनी ही निष्ठा के साथ प्रभु के साथ लगे रहना चाहिए, जितनी लगन हमने आशीष पाने के लिए दिखाई थी। यही हमारी सच्ची भक्ति और परमेश्वर को चढ़ाने योग्य सच्ची भेंट है।

धन्य हैं हमारे येशु और धन्य है उनका प्रेम

Led by the Holy Spirit, Guided by Faith and Scripture

Biblical Commentary by Sonu Kumar Saha

Date: 2nd April 2025

Contact: sks.officeuse@gmail.com

I sincerely thank my respected Pastor, Rev. Sahadev Nanda, for teaching this topic so profoundly and clearly. His guidance has been a great blessing, enriching both my knowledge and faith. May God continue to bless him abundantly.

With gratitude,

Sonu Kumar Saha